ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

आर्थिक प्रगति के लिखे समान अवसर के प्रश्न

आर. जी. बम्बोले
विभागाध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान विभाग,
भारतीय महाविद्यालय,
मोर्शी, अमरावती

सारांश

आर्थिक प्रगति यह अपने आप में महत्वपूर्ण अवधारणा है। आज विश्व पटल पर समान अवसर की भले ही चर्चाऐ जोरोसोरो से कि जा रही हो किन्तु विश्व में असमानता ही दिखाई देती है। यही यथार्थता है। प्रसिध्द राजनीति विचारक सेलिगमैन के कथन से अर्थशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान मे घनिष्ठ सम्बन्ध परिलक्षित होता है, सेलिगमैन के अनुसार ''शासन के रुप एवं कार्यो पर उत्पादन एवं वितरण का काफी प्रभाव पडता है राजनीतिक घटनाऍ, आर्थिक कारणों का ही प्रभाव है।''[1] निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि, वर्तमान समय में लोक कल्याणकारी राज्य का प्रमुख आधार ही राजनीति पहलू है। अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान का एक ही उद्‌देश्य होता है, वह है मानव कल्याण करना, जहॉ राजनीति विज्ञान राजनीतिक संगठनो का अध्ययन है, वही अर्थशास्त्र उस संगठन की आर्थिक नीव होती है। जहॉ राजनीति विज्ञान सामाजिक का ही अध्ययन करता है, अतएव दोनो का उद्‌देश्य मानव कल्याण करना है।

मुख्य शब्द : राजनीति, अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान, मराठा आंदोलन, राजनीतिक अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना

आर्थिक परिस्थितियॉ राजनीति की दिशा निर्धारित करती है। आर्थिक परिस्थितीयॉ ही होती है, जो सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के मूल में कार्य करती है। आधुनिक समाजवाद के पितामह कार्ल मार्क्स, ने तो कहा है कि, ''मानव समाज का समस्त राजनीतिक ढॉचा आर्थिक परिस्थितीयों का प्रतिबिम्ब होता है।[2] राज्य के स्वरुप, संगठन, यहॉ तक कि संविधान इत्यादी पर आर्थिक शक्तियों का स्पष्ट प्रभाव पढता है, राजनीतिक असंतोष का मूल्य कारण आर्थिक असंतोष का व्याप्त होना है, (आठ अगस्त, सितंबर 2016 के महाराष्ट्र राज्य मे निकाले गऍ मराठा आंदोलनो का मुलाकरण आर्थिक असमानता ही है।)

जस्टिस रानडे, ने अपने, ''क्लासिकी राजनीतिक अर्थव्यवस्था को सभी समयों में और सभी स्थानों पर सार्वदेशिक रुप से समग्र रुप और प्रमाण रुप से तथा आर्थिक विकास के सभी स्तरों पर ही मानने का दावा वास्तविकता से कोसो दूर था।[3]'' विशेषतः भारत जैसे पिछडे, अप्रगतिशील तथा कृषिप्रधान देश के लिए तो जिसमें प्रतियोगिता के बदले यथास्थिति और रस्मो रिवाज ही हावी रहते है, उनकी शायद ही कोई उपयोगिता थी। आज के युग में विश्व के देशों को सुविधा के लिए दो भागों में बॉटा जा सकता है। एक विश्व के उन्नत या विकसित देश आते है, जो अपने नागरिकों की भोजन वस्त्र, आवास की आवश्यकता सरलता से पूरी करने के साथसाथ उनका आर्थिक विकास भी करते है। उन्हे उत्तर (north) भी कहॉ जाता है। इन देशो में अमेरिका, जपान, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैड आदि देशों के नाम लिये जाते है। अन्य में विश्व के अल्प विकसित या विकासशील देश आते है, जो अपने नागरिकों को भोजन, वस्त्र, आवास की आवश्यकता भी सही प्रकार से पूरी नही कर पाते है, उनका जीवन स्तर बहुत नीचा होता है। उन देशो के नागरिक बेरोजगारी आर्थिक निर्धनता के शिकारी होते है। उन देशों को दक्षिण (third north) भी कहा जाता है। इन देशों में भारत, पाकिस्तान, बाग्लादेश, श्रीलंका आदि देश आते है। इन तीसरी दुनिया में ही आर्थिक प्रगति के लिये समान अवसर की समस्याऍ अधिक होती है। यहॉ पर मै मुख्य रुप से भारत के संदर्भ में ही इसमें अधिक चर्चा करुगॉ।

परिभाषाऍ

भारत के संदर्भ में इस आर्थिक प्रगति के समान अवसर के प्रश्न पर अपना संशोधन लेख का वितरण करने पूर्व मे तीसरी दुनिया अथवा विकासशील अर्थव्यवस्था के प्रति वैश्विक की परिभाषा देना उचित समझता हूॅ।

केथर्नक्रास के अनुसार, ''अल्प विकसित देश विश्व की अर्थव्यवस्था की गन्दी बस्तियॉ है।''[4]

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

(Under developed countries are the slums of the word economy)

प्रो. जे. आर. हिवस के अनुसार ''एक अल्प विकसित देश वह है। जिसमे तकनीकी और साधनों की मात्रा उत्पादन और बचत के वास्तविक स्तर के समान ही निम्न होती है। जिसका परिणाम यह होता है कि श्रमिक को प्रति इफाई औसत परिश्रमिक उस राशी से कम मिलता है, जो यदि ज्ञान साधनों में तकनीकी की व्यवस्था की जाती तो उसे प्राप्त होती।[5] An under developed country is one in which the technical and monetary ceilings are as lowas practically coincide with actual level of output and saving with the result that the average remuneration per unit of labour is lower than what it could be if know be if know technology were applied by Jr. Hicks.

भारतीय योजना आयोग के अनुसार ''एक अल्प विकसित अर्थव्यवस्था वह है, जिसमे मानवीय शक्ति का अल्प उपयोग या अनुपयोग एक और व प्राकृतिक साधनो का समुयचित उपयोग न होने की स्थिती दूसरी और साथ साथ पायी जाती है।''[6] संयुक्त राष्ट्र संघ की एक समिती की रिपोर्ट (Measures of economic development of under development countries के अनुसार, ''अल्प वास्तविक आय की तुलना में कम है।)''[7] उपरोक्त परिभाषा के आधार पर यह हम कह सकते है की, आर्थिक प्रगति के लिये समान अवसर के प्रश्न ज्यादा तर भारत जैसे राष्ट्र उभरकर सामने आते है। वैसे ही भारत में स्वतन्त्रता से लेकर आज तक आर्थिक विकास का जो ढॉचा है, इसमें वितरण की सबसे बढी समस्या उभरकर सामने आयी है। उसकी समस्याऍं यहॉ की सामाजिक संरचना एवं जातीवाद, उच्चनीच्चता की भावना एवं सामाजिक कुरितीयॉ है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय संविधान आर्थिक प्रगती के लिब समान अवसर प्रधान करता है। इसका अध्ययन करना है।

एल. पी. जी. निती आर्थिक सुधारों का बढावा देता है। इसका अध्ययन करना है।

परिकल्पना

भारतीय संविधान भारत के सभी नागरिकों को आर्थिक प्रगती के लिए समान अवसर देता है की नही इसकी जॉच पडताल करना है।

आर्थिक प्रगति के लिये समान अवसर के प्रश्न

इस पर बहस के पूर्व यहॉ पर भारतीय संविधान की उद्देशिका देखना अनिवार्य है। ''हम भारत के लोग भारत के सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक, और, राजनीतिक न्याय और राष्ट्र के एकता तथा अखंडता निश्चित करने वाली बन्धुता बढाने के लिए दृढ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26, नवम्बर, 1949 को व्दारा संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मर्पित करते है।''[8] भारतीय संविधान सभी को समान अवसर प्रदान करने की, गारन्टी देता है। यह देते समय संविधान भारत के किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव नही करता। तात्पर्य भारतीय संविधान के अनुसार केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार अपने नागरिकों को समान अवसर प्रधान करने के लिए कट्टीबध्द है। फिर भी स्वतन्त्रता के 68 बरस बित जाने पर भी, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समानता का अवसर सभी को नही मिला।

इसके लिए संविधान जवाबदेही नही है। बल्कि 1952 से लेकर 2014 तक सभी सरकारों ने पूर्ण रुप से समान अवसर सभी देने में कुथराही बरती है। परिणामस्वरुप भारत में आजतक समानता अवसर नागरीकों को नही मिल पाया। भारत में जिन तबकों को आरक्षण का लाभ मिला उनकी आर्थिक हालात बहोत अधिक सुधरी ऐसा नही है। संविधानिक प्रावधान होने के बावजूद भी प्रशासनीय भेदभाव नीतिने, अंमल करने वालो सही दिशा मे प्रयास न करने की नीति ने भारत में आर्थिक प्रगति कि समस्या पैदा की है। आर्थिक प्रगति के लिये समान अवसर के प्रश्न मुख्य रुप से भारतीय समाज रचना उच्च निच के आधार पर एवं वर्णव्यवस्था के मूलरुप में होने के कारण, पूर्ण रुप से आर्थिक समान वितरण न होना, सांविधानिक प्रावधान मे जातीगत आधार पर आरक्षण की तरतूद, सही मायने में नीति निर्धारण में पिछले तबके, लोगो को शामिल न करना, विभिन्न राज्यों मे आरक्षण का भिन्न–भिन्न होना उदा. तामिलनाडू में 69% राजस्थान राज्य में, 68%, गुजरात 59%, झारखंड 60%, महाराष्ट्र में 50%, यह विभिन्नता भी समान अवसर पर प्रभाव डालते है। भारत के उच्चतम के उच्चतम न्यायालय 50%, की शर्त रखने बावजूद भारत के विभिन्न राज्यों में आरक्षण के प्रमाण अलग–अलग होने के कारण वर्तमान भारत में आर्थिक विकास अथवा प्रगति के समान अवसर के प्रश्न निर्माण हुये है।''[8] आरक्षण भलेही पिछडेपन को देखकर दिया गया था। किन्तु आज भारतीय समाज के अपने आप में उच्च समझनेवाली जातीयॉ भी आर्थिक पिछडापन का हवाला देते हुए आरक्षण की मांग कर रहे है। बाबासाहब अम्बेकरजी ने पिछडापन, शिक्षा, सेवा में आरक्षण का प्रावधान किया था। वह भारतीय संविधान की धारा 330 से 340 के तहत प्रावधान किया था। आरक्षण नीतिका अंमल सही न होना, हमारी मानसिकता न बदलना, पिछडे लोगों को बराबरीका न मानना, जाती–जाती में तनाव पैदा करना, आर्थिक प्रगति ने समान अवसर के मुख्य प्रश्न बन गये है। इसलिये अभी सम्पूर्ण भारत में सर्वे करने के बाद केंद्र सरकार, एवं राज्य सरकारने आर्थिकता के आधार आरक्षण देना चाहिए!

आर्थिक प्रगति के लिये अवसर के प्रश्न

एल.पी.जी.के परिप्रेक्ष्य में

भारत में आर्थिक प्रगति के लिये समान अवसर प्रश्न एलपीजी के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो प्रश्न गंभीर बन गये है। नए आर्थिक सुधारो के समर्थ को की नजर में भारतीय अर्थव्यवस्था पर (उदारीकरण, नीतिकरण और भूमंडलीकरण एलपीजी) नीतियां के सकारात्मक प्रभाव निम्न रहे।

जीवित अर्थव्यवस्था

आर्थिक सुधारों से भारतीय अर्थव्यवस्था निश्चित रुप से ज्यादा जीवित हुई है। उदारीकरण, नीजिकरण और भूंडलीय को नीतियो के बाद आर्थिक गतिविधियों का स्तर बढा है। इसके नतीजे जीडीपी को आर्थिक विकास

दर पर देखें जा सकते है। वर्तमान से जीडीपी की विकास दर आय प्रतिशत से बनी हुई है। योजनाकारों और राजनीतियों का अनुमान है कि विकास दर आठ प्रतिशत से बनी हुई है। योजनाकारों और राजनीतीयों का अनूमान है कि, निकट भविष्य में भी अर्थव्यवस्था की यही रफ्तार बनी रहेगी।

औद्योगिक उत्पादन में उत्साह

एलपीजी नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था में औद्योगिक उत्पादन के एक उत्प्रेरक के रुप में काम किया है वर्तमान में औद्योगिक उत्पादन 10 प्रतिशत के आसपास है जो कि 1991 से पहले के मुकाबले लंबी छलांग है।

राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण

बढता राजकोषीय घाटा भारतीय अर्थव्यवस्था में निवेश को गंभीर खतरा था। 1991 से पहल यह जीडीपी का 8.5%था। एलपीजी नीतियों के कारण सरकारी राजस्व में वृध्दी हुई। इसके साथ ही वर्ष 2007–08 में राजकोषीय घाटा सिमटकर जीडीपी का 2.7 रह गया। यह पर्याप्त स्तर तक नही घटा लेकिन पहल की तुलना में यह महत्वपूर्ण रुप कम है।

मुद्रास्फिती पर नियंत्रण

सेवाओं और वस्तुओं को बेहतर प्रवाह से देष में मुद्रास्फिती पर नियंत्रण पाने में मदद मिली है। वर्ष 2007 के मध्य तक मुद्रस्फिती की दर 4.5% के आसपास थी जिससे कोई संकट नही था।

उपभोक्त की सर्वोच्चता

पिछले कुछ वर्षो से उपभोक्ता की सर्वोच्चता में इजाफा हुआ है। यह एक तथ्य है, कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध सेवाएँ और वस्तुओं तक भारतीय उपभोक्ताओं की पहुॅच है। उत्पादक दर हालात में उपभोक्ताओं की पसंद और वरीयता को तरजीह दे रहे है। परिवारों का घरेलु खर्च बढ रहा है। जो सुधरते जीवन स्तर की और संकेत करता है।

विदेशी मुद्रा भंडार में वृध्दि

विदेशी मुद्रा भंडार की निम्नतम स्थिति ने सरकार को एलपीजी नीतियां लागू करने के लिए मजबूर किया है। एलपीजी नीतीयों के कारण विदेशी मुद्रा भंडार सामान्य स्थिति में है। बेहतर विदेशी मुद्रा भंडार अर्थव्यवस्था की मजबूती दर्शाता है और अर्थव्यवस्था पर निवेशको का भरोसा बढता है।

एलपीजी नीतीयों के नकारात्मक प्रभाव

नई अर्थिक नीतियों के विरोधियों के अनुसार हर चमकने वाली वस्तु सोना नही होती यह चीज का एक नकारात्मक पक्ष भी होता है। भारत में एलपीजी नीतियों का नकारात्मक पक्ष निम्नलिखित है।

कृषि को अनदेखा करना

जीडीपी के विकास में औद्योगिक क्षेत्र की वृध्दी दर महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एलपीजी नीतियों के तहत समस्त शक्ति कृषि से हटाकर औद्योगिक क्षेत्र में लगा दी गई। इससे कृषि विकास दर को जबरदस्त झटका लगा। कृषि को झटका लगने का तात्पर्य भारत के करोडो लोगों की आजीविका के साधन को झटका लगता है। कृषि को अनदेखा करने से गरीबी बढी है। परिणाम स्वरुप और कृषि में अर्थात व्यापारी वर्ग एवं किसानों में आर्थिक असमानता पैदा हुयी इसमें समान अवसर का प्रश्न खडा हुआ।

विकास प्रकिया का शहरो में केन्द्रिकरण

एलपीजी नीतियों का परिणाम है की विकास प्रकिया शहरो में केन्द्रीत हो गई किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी का शायद ग्रामीण क्षेत्र में कोई निशान सभी बहुराष्ट्रीय कंपनीया शहरी मे केन्द्रीत है। जहॉ, उन्हे अनुकूल ढॉचागत सुविधाएॅ प्राप्त होती है। इससे आर्थिक प्रगति के समान अवसर का प्रश्न निर्माण हुआ है। अर्थात शहर और गॉव के बीच की खाई बढती जा रही है। समाज में किसी भी तरह को दोहरी नीती से आर्थिक विकास को खतरा होता है।

आर्थिक उपनिवेशवाद

भारत ने तकरीबन 200 साल तक ब्रिटीश उपनिवेशवाद झेल रहे है। अब भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुराष्ट्रीय कंपनीयों का अधिपात्य है। हम एक ऐसी स्थिती पैदा हो गई है कि भारतीय बाजार में बहुराष्ट्रीय कंपनीयों अपने उत्पादन बेच रही है और इस प्रकिया में भारतीय उत्पादक प्रतिस्पर्धा में टिक नही पा रहे है।

सांस्कृतिक झरण

भूमंडलीकरण भारतीय संस्कृति के झरण का कारण भी बना है। आर्थिक समृध्दि ने जीवन के सभी पैनानों को एक दिया है। हर कोई आर्थिक रुपसे स्वतंत्र होना चाहता है और अब परिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहता है। परिवार और समाज के प्रति निष्ठा छोड दी गई है जब कि वे भारतीय समाज का आधार रही है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर शोध आलेख के निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

निष्कर्ष

1. भारतीय संविधान आर्थिक प्रगति के लिए समान अवसर प्रधान करता है।
2. भारतीय समाज रचनाही अवसर की समानता में बाधक है।
3. आरक्षण नीति नेभारतीय समाज में नयी सोच पैदा की है।
4. विभिन्न राज्यों में आरक्षण विभिन्न प्रकार का है।
5. अमीरी–गरीबी समान अवसर मे भयावह बाधॉ डालती है।
6. एलपीजी नीति ने आर्थिक सुधारो से प्रभावित किया है।
7. एलपीजी नीति ने शहर और गॉव के बीच खाई बढाई है, इससे आर्थिक प्रगति के समान अवसर का प्रश्न खडा किया।
8. आर्थिक प्रगति के समान अवसर के प्रश्नों में परिवार एवं समाज के प्रति सोच नकारात्मक बन गयी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *तेलंग फ्रि प्रोटेक्शन ''फ्रामएन इंडियन प्वाइंट ऑफ न्यू,'' (मुंबई 1877) पृ. 4*
2. *चंद्र बिपन ''भारत आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास'' अनामिका पब्लिशर्स एंड ड्रिस्ट्रीब्यूटर्स दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2008–पृ. 325*

3. *"Indian in the era of economics reforms" 28, Jan, 2004, The Hindu business line.*
4. *Chaudhari sudip, "Economics reforms and Industrial structure in India," economics and political weekly, 12, January, 2002.*
5. *सिन्हा मनोज – (संपादित) ''समकालीन भारत एक परिचय,'' ओरिएंट ब्लैकस्वॉन, 2012 पृ. 97–98*
6. *Economics reforms in India since 1991, Has araduli worked by M.S. Ahlawalia planning commision nice in.*
7. *डॉ. जैन पुखराज एवं, डॉ. फडिया बी. एल. ''भारतीय शासन एवं राजनीति,'' साहित्य भवन, पब्लिकेशर्क्स आगरा, 2012 पृ. 28, 29*